E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के षष्ठ अङ्क का सारांश

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

प्रारम्भ में नगर रक्षक श्याल और पीछे बँधे एक मनुष्य को लेकर दो रक्षी (सिपाही) मञ्च पर आते हैं। रक्षी उस पुरुष को पीटकर पूछते हैं कि राजा के नाम से चिह्नित यह अंगूठी उसके पास कहाँ से आयी? वह बतलाता है कि शक्रावतार तीर्थ में फँसाई गई मछली का पेट फाड़ने पर उसके अन्दर से यह अंगूठी मिली है।

उसकी बात की पुष्टि के लिये नगर-रक्षक (श्याल) यह सूचना राजा को देता है तथा राजा के कहने से अंगूठी के बराबर धन देकर उसे छोड़ देता है। श्याल धीवर के साथ प्रसन्न होकर मदिरा की दुकान पर जाता है।

मेनका की सखी सानुमती नामक अप्सरा अन्तर्धान होकर राजा दुष्यन्त के प्रभवन में उसकी दो परिचारिकाओं की बातें सुनती है। वसन्त का मादक सौन्दर्य चारों तरफ विकीर्ण हो रहा है और परिचारिकायें कामदेव की पूजा कर रही हैं। तभी कञ्चुकी आकर उनको फूल तोड़ने का निषेध करता है एवं कहता है कि राजा ने मदनोत्सव का निषेध कर दिया है। उन परिचारिकाओं द्वारा निषेध का कारण पूछने पर कञ्चुकी बतलाता है कि अंगूठी के दर्शन से राजा की स्मृति सजीव हो गयी। परिणामस्वरूप जब उसे शकुन्तला के साथ अपने गान्धर्व विवाह का स्मरण आया तब से वह पश्चात्ताप की अग्नि में दग्ध हो रहा है। उद्विग्न मन होने के कारण उसने उत्सव का निषेध कर दिया है।

तदनन्तर विदूषक के साथ राजा उद्यान में प्रवेश करता है। वह विदूषक को शकुन्तला का चित्र दिखलाता है तथा उसे (शकुन्तला को) अंगूठी का पूरा वृत्तान्त सुनाता है। सानुमती यह सब सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होती है कि उसकी सखी शकुन्तला को भूला प्रणयी अब उसके प्रति अनुरक्त हो रहा है।

राजा अनेक प्रकार से अपने को अपराधी स्वीकार करता हुआ खिन्न हो जाता है तथा शकुन्तला का चित्र मँगाकर उसमें परिवर्धन करने की कल्पना करके आँसू बहाता है।

तत्पश्चात् प्रतीहारी मन्त्री का एक पत्र लाती है कि धनमित्र नामक एक व्यापारी नौका-दुर्घटना में मर गया। वह चूँकि सन्तानहीन है अतः उसका धन राजकोष में जायेगा। सन्तानहीन का प्रसङ्ग आने पर राजा इसलिए और दुःखी हो जाता है कि गर्भ धारण करने वाली उसकी पत्नी उसके द्वारा छोड़ दी गयी। वंश-विच्छेद से अत्यन्त आकुल हो रहे पितरों की दशा को सोचकर उसका हृदय फट जाता है। यह दृश्य सानुमती देखती है और राजा के निश्छल प्रेम की जानकारी होने पर वह आश्वस्त होकर चली जाती है।

उसके बाद प्रतीहारी प्रवेश करती है। इसी समय इन्द्र का सारथि मातलि विदूषक को पकड़ कर पीटना शुरू कर देता है। उसकी रक्षा करने के लिये राजा ध्वनि के सहारे शर-सन्धान करता है। तब विदूषक को छोड़कर मातलि राजा के समक्ष उपस्थित होता है और निवेदन करता है कि दुर्जय नामक राक्षसों को नष्ट करने के लिये आप इन्द्र की सहायता करें। तब राजा मातलि से पूछता है कि उसने माढव्य के प्रति ऐसा व्यवहार क्यों किया? तब वह उत्तर देता है "मैंने आपको अत्यन्त उद्विग्न देखा अतः वीरोचित कार्य के सम्पादन हेतु आपको उत्तेजित करने के लिये ऐसा कार्य किया"। इन्द्र की आज्ञा को दृष्टिगत कर राजा मन्त्री पिशुन को प्रत्यावर्तन काल तक राज्य भार सौंप कर तथा इन्द्र के रथ पर आरूढ होकर स्वर्ग के लिये प्रस्थान करता है।